पर-ब्रह्म की चिन्मय-शक्तियाँ

जय माँ काली!
परब्रह्म-रूपां भजामि

जय माँ तारा!
परब्रह्म-रूपां भजामि

जय माँ षोडशी!
परब्रह्म-रूपां भजामि

जय माँ भुवनेश्वरी!
परब्रह्म-रूपां भजामि

जय माँ छिन्नमस्ता!
परब्रह्म-रूपां भजामि

'चण्डी'-पुस्तक-माला की कुछ उपयोगी पुस्तकें

- मन्त्र-कोष — २००/-
- दश महा-विद्या-साधना (४ पुस्तकें) — १२०/-
- मन्त्रात्मक सप्तशती — ५००/-
- सार्थ चण्डी (श्रीदुर्गा सप्तशती) — २५०/-
- अद्भुत सप्तशती — १००/-
- हवनात्मक अद्भुत सप्तशती — ३५/-
- सम्पुटित श्रीदुर्गा-सप्तशती — ४०/-
- सप्त-दिवसीय सप्तशती-पाठ — ३५/-
- सप्तशती-तत्त्व — ३०/-
- सप्तशती के विविध प्रकार — २०/-
- साधना-रहस्य — ४०/-
- दीक्षा-प्रकाश — ३५/-
- श्रीकाली-कल्पतरु — ७०/-
- श्रीतारा-कल्पतरु — ३५/-
- श्रीबाला-कल्पतरु — ३५/-
- श्रीशिव-शक्ति-अङ्क — ४०/-
- श्रीबगला-साधना — ४५/-
- श्रीरमा-पारायण — ३५/-
- श्रीदुर्गा-कल्पतरु — १५/-
- नव-ग्रह-साधना — ५०/-
- कुण्डलिनी-साधना — २५/-
- शत-चण्डी-विधान — २५/-
- अघोर-पन्थ का निरूपण — २५/-
- श्रीमहा-गणपति-साधना — ३५/-
- साधक का संवाद — २५/-
- धर्म-मार्ग पर — २५/-
- महा-शक्ति-पीठ विन्ध्याचल — २०/-

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें
श्रीचण्डी-धाम
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-०६ ☆ फोन ०५३२-२५०२७८३, ९४५०२२२७६७
E-mail : Chandi_dham@rediffmail.com

वर्ष ६८
अङ्क ०५

श्रीभवानी-साधना

★ श्रीभवानी-सहस्त्र-नामावली ★

एवं

★ श्रीभवानी-शतक ★

अरुणां करुणा-तरङ्गिताक्षीं, धृत-पाशांकुश-वाण-चाप-हस्ताम् ।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम् ।।

जिनकी आखों में करुणा लहरा रही है, जिनके हाथों में पाश, अंकुश, वाण और धनुष हैं, जो अणिमादि-रूपी किरणों से आवृत्त हैं, उन अरुणा भवानी का मैं आत्म-भाव से ध्यान करता हूँ।

★★★

सम्पादक
रमादत्त शुक्ल
ऋतशील शर्मा

★★★

प्रकाशक
पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक
परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ०५३२-२५०२७८३

अनुदान १५/-

पर-ब्रह्म-रूपा

'शिवा' अर्थात् 'भवानी' की साधना

भारत-भूमि में अत्यन्त प्राचीन काल से '**पर-ब्रह्म की शक्ति**'-'**शिवा**' अर्थात् '**भवानी**' की '**साधना-पूजा**' प्रचलित रही है। **श्रीआदि-शङ्कराचार्य** द्वारा रचित '**सौन्दर्य-लहरी**' इसका अत्यन्त स्पष्ट प्रमाण है। '**सौन्दर्य-लहरी**' के पहले श्लोक में ही **श्रीआदि-शङ्कराचार्य** जी ने कहा है-" **हे प्रभु! हे विश्व-नायक! तू सदा 'शक्ति'-मय ही है। यदि तू 'शक्ति'-रहित होता**, तो '**ई**'-कार से रहित '**शिव**' अर्थात् '**शव**'-वत् होता। तब, '**विश्व-क्रिया**' का स्पन्द **कहाँ और किस प्रकार होता?...... अत: 'शिव-विष्णु-ब्रह्मा' को वरदान देनेवाली, सभी देवों द्वारा वन्दनीय आपकी 'शक्ति'-'भवानी' ही विश्व में आराध्या या आराधना करने योग्य हैं।.....**"

यही नहीं, '**सौन्दर्य-लहरी**' के २२ वें श्लोक '**भवानि! त्वं**' में **श्रीआदि-शङ्कराचार्य** जी ने '**भवानी**' के प्रति '**भक्ति'-भाव** को पूरी तरह स्पष्ट किया है और उसके बाद उनकी महिमा का '**नख से शिख**' तक अनूठा वर्णन किया है।

इससे यह भली-भाँति स्पष्ट होता है कि '**शिवा**' अर्थात् '**भवानी**' की साधना-'**वेदों**', '**उपनिषदों**' के युग से प्रचलित रही है और **श्रीआदि-शङ्कराचार्य** जी ने उसी को अपनी प्रसिद्ध रचना '**सौन्दर्य-लहरी**' के द्वारा सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया है।

वास्तव में, 'शिवा' अर्थात् 'भवानी'-वात्सल्य-मयी महा-माता हैं। बिना इनका सहारा **लिए किसी को 'परम तत्त्व की प्राप्ति' सम्भव नहीं है।** समस्त प्राणियों में आपकी '**कृपा**' का **बराबर वर्षण होता रहता है।** नाना प्रकार की सांसारिक कामनाओं से घिरे रहने के कारण लोगों को आपकी '**कृपा**' का अनुभव नहीं हो पाता।

अस्तु! '**भवानी**' की **कृपा**-प्राप्ति हेत ही यहाँ पाठकों के समक्ष '**श्रीभवानी-सहस्त्र-नामावली**' और '**श्रीभवानी-शतक**' प्रस्तुत हैं। आशा है, पाठक-बन्धु इससे लाभ उठाएँगे, विशेषकर '**नवरात्र**' जैसे महा-पर्वों पर।

-ऋतशील शर्मा

विधि-पहले '**सङ्कल्प**' आदि कर '**त्रि-नयना भवानी**' का '**ध्यान**', '**मानस-पूजन**' करना चाहिए। फिर **श्रीभवानी-सहस्त्र-नामावली** का जप कर **ब्रह्म-निष्ठ महात्मा श्रीनिरञ्जन जी महाराज** द्वारा विरचित **श्रीभवानी-शतक** का **भक्ति-पूर्वक पाठ** करना चाहिए। यदि दोनों का एक साथ पाठ सम्भव न हो, तो अपनी सुविधानुसार अलग-अलग पाठ भी कर सकते हैं। जिन्हें **श्रीभवानी-सहस्त्र-नामावली का जप-पाठ** करना कठिन प्रतीत होता है, वे अकेले **श्रीभवानी-शतक का पाठ** भी कर सकते हैं।

सङ्कल्प— ॐ तत् सत्। अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि-द्वितीय-प्रहरार्द्धे, श्वेत-वराह-कल्पे, जम्बू-द्वीपे, भरत-खण्डे, आर्यावर्त-देशे, पुण्य-क्षेत्रे, कलि-युगे, कलि-प्रथम-चरणे, अमुक (....) सम्वत्सरे, अमुक (...) मासे, अमुक (...) पक्षे, अमुक (...) तिथौ, अमुक (...) वासरे, अमुक (...) गोत्रः, अमुक-शर्मा (वर्मा/गुप्ता/दासो), अहं श्रीभवानी-प्रीत्यर्थे सहस्र-नाम-मन्त्रैः यथा-शक्ति यजनं करिष्ये।

आचमन— ॐ एक-वीरायै नमः, ॐ महा-मायायै नमः, ॐ पार्वत्यै नमः, ॐ गिरिश-प्रियायै नमः, ॐ गौर्यै नमः, ॐ करालिन्यै नमः।

विनियोग— ॐ अस्य श्रीभवानी-नाम-सहस्र-मन्त्रस्य श्रीभगवान् महा-देव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीभवानी देवता, ह्लीं बीजं, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, श्रीभवानी-प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास— श्रीभगवान्-महा-देव-ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे, श्रीभवानी-देवतायै नमः हृदये, ह्लीं-बीजाय नमः गुह्ये, श्रीं-शक्तये नमः नाभौ, क्लीं-कीलकाय नमः, श्रीभवानी-प्रीत्यर्थं जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर-न्यास— ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ तर्जनीभ्यां नमः, ॐ मध्यमाभ्यां नमः, ॐ अनामिकाभ्यां नमः, ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्ग-न्यास— ॐ हृदयाय नमः, ॐ शिरसे स्वाहा, ॐ शिखायै वषट्, ॐ कवचाय हुं, ॐ नेत्र-त्रयाय वौषट्, ॐ अस्त्राय फट्।

ध्यान—(१) ॐ अर्धेन्दु मौलिममलाममराभि-वन्द्याम्, अम्भोज-पाश-सृणि-रक्त-कपाल-हस्ताम्।
रक्ताङ्ग-राग-वसनाऽऽभरणां त्रिनेत्राम्, ध्याये शिवस्य वनितां मद-विह्वलाङ्गीम्॥

अर्थात् मस्तक पर अर्ध-चन्द्र, देवों द्वारा वन्दिता, चार हाथों में कमल, पाश, अङ्कुश और रक्त-कपाल, लाल चन्दनादि सुगन्धित लेप, वस्त्र एवं आभूषणों से सुशोभिता, मद-मत्ता, शिव-पत्नी, त्रिनेत्रा भवानी का मैं ध्यान करता हूँ।

ध्यान—(२) ॐ बालार्क-मण्डलाभासां, चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशाङ्कुश-शरं-चापं, धारयन्तीं शिवां भजे॥

अर्थात् उदय होते हुए सूर्य-मण्डल के समान अरुण आभा, चार भुजाओं में पाश, अङ्कुश, बाण एवं धनुष-धारिणी, त्रिनयना शिवा का मैं भजन करता हूँ।

मानस-पूजन— ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीभवानी-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीभवानी-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीभवानी-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीभवानी-प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीभवानी-प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीभवानी-प्रीतये समर्पयामि नमः।

श्रीभवानी-सहस्र-नामावलिः

ॐ महा-विद्यायै नमः
ॐ जगन्मात्रे नमः
ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः
ॐ शिव-प्रियायै नमः
ॐ विष्णु-मायायै नमः
ॐ शुभायै नमः
ॐ शान्तायै नमः
ॐ सिद्धायै नमः
ॐ सिद्ध-सरस्वत्यै नमः
ॐ क्षमायै नमः ॥ १० ॥
ॐ कान्त्यै नमः
ॐ प्रभायै नमः
ॐ ज्योत्स्नायै नमः
ॐ पार्वत्यै नमः
ॐ सर्व-मङ्गलायै नमः
ॐ हिङ्गुलायै नमः
ॐ चण्डिकायै नमः
ॐ दान्तायै नमः
ॐ पद्मायै नमः
ॐ लक्ष्म्यै नमः
ॐ हरि-प्रियायै नमः
ॐ त्रिपुरा-नन्दिन्यै नमः
ॐ नन्दायै नमः
ॐ सुनन्दायै नमः
ॐ सुर-वन्दितायै नमः
ॐ यज्ञ-विद्यायै नमः
ॐ महा-मायायै नमः
ॐ वेद-मात्रे नमः
ॐ सुधा-धृत्यै नमः
ॐ प्रीति-प्रदायै नमः ॥ ३० ॥
ॐ प्रसिद्धायै नमः
ॐ मृणान्यै नमः
ॐ विन्ध्य-वासिन्यै नमः
ॐ सिद्ध-विद्यायै नमः
ॐ महा-शक्त्यै नमः
ॐ पृथिव्यै नमः
ॐ नारद-सेवितायै नमः
ॐ पुरुहूत-प्रियायै नमः
ॐ कान्तायै नमः
ॐ कामिन्यै नमः ॥ ४० ॥
ॐ पद्म-लोचनायै नमः
ॐ प्रह्लादिन्यै नमः
ॐ महा-मात्रे नमः
ॐ दुर्गायै नमः
ॐ दुर्गार्ति-नाशिन्यै नमः
ॐ ज्वाला-मुख्यै नमः
ॐ सु-गोत्रायै नमः
ॐ ज्योतिषे नमः
ॐ कुमुद-वासिन्यै नमः
ॐ दुर्गमायै नमः ॥ ५० ॥
ॐ दुर्लभायै नमः
ॐ विद्यायै नमः
ॐ स्वर्गतये पुर-वासिन्यै नमः
ॐ अपर्णायै नमः
ॐ शाम्बर्यै नमः
ॐ मायायै नमः
ॐ मदिरायै नमः
ॐ मृदु-हासिन्यै नमः
ॐ कुल-वागीश्वर्यै नमः
ॐ नित्यायै नमः ॥ ६० ॥
ॐ नित्य-क्लिन्नायै नमः
ॐ कृशोदर्यै नमः
ॐ कामेश्वर्यै नमः
ॐ नीलायै नमः
ॐ भेरुण्डायै नमः
ॐ वह्नि-वासिन्यै नमः
ॐ लम्बोदर्यै नमः
ॐ महा-काल्यै नमः
ॐ विद्या-विद्येश्वर्यै नमः
ॐ नरेश्वर्यै नमः ॥ ७० ॥
ॐ सत्यायै नमः
ॐ सर्व-सौभाग्य-वर्धिन्यै नमः
ॐ सङ्कर्षिण्यै नमः
ॐ नारसिंह्यै नमः
ॐ वैष्णव्यै नमः
ॐ महोदर्यै नमः
ॐ कात्यायन्यै नमः
ॐ चम्पायै नमः
ॐ सर्व-सम्पत्ति-कारिण्यै नमः
ॐ नारायण्यै नमः ॥ ८० ॥
ॐ महा-निद्रायै नमः

ॐ योग-निद्रायै नमः
ॐ प्रभा-वत्यै नमः
ॐ प्रज्ञायै नमः
ॐ पारमिता-प्राज्ञायै नमः
ॐ तारायै नमः
ॐ मधु-मत्यै नमः
ॐ मध्वै नमः
ॐ क्षीरार्णव-सुधा-हारायै नमः
ॐ कालिकायै नमः ॥९०॥
ॐ सिंह-वाहनायै नमः
ॐ ॐ कारायै नमः
ॐ सुधा-कारायै नमः
ॐ चेतनायै नमः
ॐ कोपनाकृत्यै नमः
ॐ अर्ध-विन्दु-धरायै नमः
ॐ धीरायै नमः
ॐ विश्व-मात्रे नमः
ॐ कला-वत्यै नमः
ॐ पद्मा-वत्यै नमः ॥ १०० ॥
ॐ सु-वस्त्रायै नमः
ॐ प्रबुद्धायै नमः
ॐ सरस्वत्यै नमः
ॐ कुण्डासनायै नमः
ॐ जगद्धात्र्यै नमः
ॐ बुद्ध-मात्रे नमः
ॐ जिनेश्वर्यै नमः
ॐ जिन-मात्रे नमः
ॐ जिनेन्द्रायै नमः
ॐ शारदायै नमः ॥ ११० ॥
ॐ हंस-वाहनायै नमः

ॐ राज-लक्ष्म्यै नमः
ॐ वषट्-कारायै नमः
ॐ सुधा-कारायै नमः
ॐ सुधोत्सुकायै नमः
ॐ राज-नीतये नमः
ॐ त्रयी-वार्तायै नमः
ॐ दण्ड-नीतये नमः
ॐ क्रिया-वत्यै नमः
ॐ सद्-भूत्यै नमः
ॐ तारिण्यै नमः
ॐ श्रद्धायै नमः
ॐ सद्-गतये नमः
ॐ सत्-परायणायै नमः
ॐ सिन्धवे नमः
ॐ मन्दाकिन्यै नमः
ॐ गङ्गायै नमः
ॐ यमुनायै नमः
ॐ सरस्वत्यै नमः
ॐ गोदावर्यै नमः ॥ १३० ॥
ॐ विपाशायै नमः
ॐ कावेर्यै नमः
ॐ शत-ह्रदायै नमः
ॐ सरयुवे नमः
ॐ चन्द्र-भागायै नमः
ॐ कौशिक्यै नमः
ॐ गण्डक्यै नमः
ॐ शुचये नमः
ॐ नर्मदायै नमः
ॐ कर्म-नाशायै नमः ॥ १४० ॥
ॐ चर्मण्वत्यै नमः

ॐ वेदिकायै नमः
ॐ वेत्र-वत्यै नमः
ॐ वितस्तायै नमः
ॐ वरदायै नमः
ॐ नर-वाहनायै नमः
ॐ सत्यै नमः
ॐ पति-व्रतायै नमः
ॐ साध्व्यै नमः
ॐ सु-चक्षुषे नमः ॥ १५० ॥
ॐ कुण्ड-वासिन्यै नमः
ॐ एक-चक्षुषे नमः
ॐ सहस्राक्ष्यै नमः
ॐ सु-श्रोण्यै नमः
ॐ भग-मालिन्यै नमः
ॐ सेना-श्रोण्यै नमः
ॐ पताकायै नमः
ॐ सु-व्यूहायै नमः
ॐ युद्ध-कांक्षिण्यै नमः
ॐ पताकिन्यै नमः ॥ १६० ॥
ॐ दया-रम्भायै नमः
ॐ विपञ्च्यै नमः
ॐ पञ्चम-प्रियायै नमः
ॐ परायै नमः
ॐ पर-कलायै नमः
ॐ कान्तायै नमः
ॐ त्रि-शक्त्यै नमः
ॐ मोक्ष-दायिन्यै नमः
ॐ ऐन्द्र्यै नमः
ॐ माहेश्वर्यै नमः ॥१७०॥
ॐ ब्राह्म्यै नमः

ॐ कौमार्यै नमः
ॐ कुल-वासिन्यै नमः
ॐ इच्छायै नमः
ॐ भगवत्यै नमः
ॐ शक्त्यै नमः
ॐ काम-धेनवे नमः
ॐ कृपा-वत्यै नमः
ॐ वज्रायुधायै नमः
ॐ वज्र-हस्तायै नमः ॥१८०॥
ॐ चण्डयै नमः
ॐ चण्ड-पराक्रमायै नमः
ॐ गौर्यै नमः
ॐ सुवर्ण-वर्णायै नमः
ॐ स्थिति-संहार-कारिण्यै नमः
ॐ एकाऽनेकायै नमः
ॐ महेज्यायै नमः
ॐ शत-बाहवे नमः
ॐ महा-भुजायै नमः
ॐ भुजङ्ग-भूषणायै नमः ॥ १९० ॥
ॐ भूषायै नमः
ॐ षट्-चक्र-क्रम-वासिन्यै नमः
ॐ षट्-चक्र-भेदिन्यै नमः
ॐ श्यामायै नमः
ॐ कायस्थायै नमः
ॐ काय-वर्जितायै नमः
ॐ सु-स्मितायै नमः
ॐ सु-मुख्यै नमः
ॐ क्षामायै नमः
ॐ मूल-प्रकृत्यै नमः ॥२००॥
ॐ ईश्वर्यै नमः

ॐ अजायै नमः
ॐ बहु-वर्णायै नमः
ॐ पुरुषार्थ-प्रवर्तिन्यै नमः
ॐ रक्तायै नमः
ॐ नीलायै नमः
ॐ सितायै नमः
ॐ श्यामायै नमः
ॐ कृष्णायै नमः
ॐ पीतायै नमः ॥ २१० ॥
ॐ कर्बुरायै नमः
ॐ क्षुधायै नमः
ॐ तृष्णायै नमः
ॐ जरायै नमः
ॐ वृद्धायै नमः
ॐ तरुण्यै नमः
ॐ करुणालयायै नमः
ॐ कलायै नमः
ॐ काष्ठायै नमः
ॐ मुहूर्तायै नमः ॥२२०॥
ॐ निमिषायै नमः
ॐ काल-रूपिण्यै नमः
ॐ सुवर्ण-रसनायै नमः
ॐ नासा-चक्षुः-स्पर्श-वत्यै नमः
ॐ रसायै नमः
ॐ गन्ध-प्रियायै नमः
ॐ सु-गन्धायै नमः
ॐ सु-स्पर्शायै नमः
ॐ मनो-गत्यै नमः
ॐ मृग-नाभ्यै नमः ॥ २३० ॥
ॐ मृगाक्ष्यै नमः

ॐ कर्पूरामोद-धारिण्यै नमः
ॐ पद्म-योन्यै नमः
ॐ सु-केश्यै नमः
ॐ सु-लिङ्गायै नमः
ॐ भग-रूपिण्यै नमः
ॐ योनि-मुद्रायै नमः
ॐ महा-मुद्रायै नमः
ॐ खेचर्यै नमः
ॐ खग-गामिन्यै नमः ॥ २४० ॥
ॐ मधु-श्रियै नमः
ॐ माधव्यै नमः
ॐ वल्ल्यै नमः
ॐ मधु-मत्तायै नमः
ॐ मदोद्धतायै नमः
ॐ मातङ्ग्यै नमः
ॐ शुक-हस्तायै नमः
ॐ पुष्प-बाणेक्षु-चापिन्यै नमः
ॐ रक्ताम्बर-धरायै नमः
ॐ क्षीबायै नमः ॥ २५० ॥
ॐ रक्त-पुष्पावतंसिन्यै नमः
ॐ शुभ्राम्बर-धरायै नमः
ॐ धीरायै नमः
ॐ महा-श्वेतायै नमः
ॐ वसु-प्रियायै नमः
ॐ सु-वेण्यै नमः
ॐ पद्म-हस्तायै नमः
ॐ मुक्ता-हार-विभूषणायै नमः
ॐ कर्पूरामोद-निश्वासायै नमः
ॐ पद्मिन्यै नमः ॥ २६० ॥
ॐ पद्म-मन्दिरायै नमः

ॐ खड्गिन्यै नमः
ॐ चक्र-हस्तायै नमः
ॐ भुशुण्ड्यै नमः
ॐ परिघायुधायै नमः
ॐ चापिनी-पाश-हस्तायै नमः
ॐ त्रिशूल-वर-धारिण्यै नमः
ॐ सु-वाणा-शक्ति-हस्तायै नमः
ॐ मयूर-वर-वाहनायै नमः
ॐ वरायुध-धरा-वीरायै नमः
ॐ वीर-पान-मदोत्कटायै नमः
ॐ वसुधायै नमः
ॐ वसु-धारायै नमः
ॐ जयायै नमः
ॐ शाकम्भर्यै नमः
ॐ शिवायै नमः
ॐ विजयायै नमः
ॐ जयन्त्यै नमः
ॐ सु-स्तन्यै नमः
ॐ शत्रु-नाशिन्यै नमः ॥ २८० ॥
ॐ अन्तर्वत्न्यै नमः
ॐ वेद-शक्त्यै नमः
ॐ वरदायै नमः
ॐ वर-धारिण्यै नमः
ॐ शीतलायै नमः
ॐ सुशीलायै नमः
ॐ बाल-ग्रह-विनाशिन्यै नमः
ॐ कौमार्यै नमः
ॐ सुपर्वायै नमः
ॐ कामाख्यायै नमः ॥२९०॥
ॐ काम-वन्दितायै नमः

ॐ जालन्धर-धराऽनन्तायै नमः
ॐ काम-रूप-निवासिन्यै नमः
ॐ काम-बीज-वत्यै नमः
ॐ सत्यायै नमः
ॐ सत्य-धर्म-परायणायै नमः
ॐ स्थूल-मार्ग-स्थितायै नमः
ॐ सूक्ष्मायै नमः
ॐ सूक्ष्म-बुद्धि-प्रबोधिन्यै नमः
ॐ षट्-कोणायै नमः ॥३००॥
ॐ त्रि-कोणायै नमः
ॐ त्रि-नेत्रायै नमः
ॐ त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः
ॐ वृष-प्रियायै नमः
ॐ वृषारूढ़ायै नमः
ॐ महिषासुरा-घातिन्यै नमः
ॐ शुम्भ-दर्प-हरायै नमः
ॐ दीप्तायै नमः
ॐ दीप्त-पावक-सन्निभायै नमः
ॐ कपाल-भूषणायै नमः ॥ ३१० ॥
ॐ काल्यै नमः
ॐ कपाल-माल्य-धारिण्यै नमः
ॐ कपाल-कुण्डलायै नमः
ॐ दीर्घायै नमः
ॐ शिव-दूत्यै नमः
ॐ घन-ध्वन्यै नमः
ॐ सिद्धिदायै नमः
ॐ नित्यायै नमः
ॐ सत्य-मार्ग-प्रबोधिन्यै नमः
ॐ कम्बु-ग्रीवायै नमः ॥ ३२० ॥

ॐ वसुमती-छत्र-छाया-कृतालयायै नमः
ॐ जगद्-गर्भायै नमः
ॐ कुण्डलिन्यै नमः
ॐ भुजगाकार-शायिन्यै नमः
ॐ प्रोल्लसत्-सप्त-पद्मायै नमः
ॐ नाभि-नाल-मृणालिन्यै नम
ॐ मूलाधारायै नमः
ॐ निराकारायै नमः
ॐ वह्नि-कुण्ड-कृतालयायै नमः
ॐ वायु-कुण्ड-सुखासीनायै नमः
ॐ निराधारायै नमः
ॐ निराश्रयायै नमः
ॐ श्वासोच्छ्वास-गतये नम
ॐ जीव-ग्राहिण्यै नमः
ॐ वह्नि-संश्रयायै नमः
ॐ वल्ली-तन्तु-समुत्थानायै नमः
ॐ षड्-रसास्वाद-लोलुपाय नमः
ॐ तपस्विन्यै नमः
ॐ तपस्सिद्ध्यै नमः
ॐ सप्तधायै नमः ॥ ३४० ॥
ॐ सिद्धि-दायिन्यै नमः
ॐ तपो-निष्ठायै नमः
ॐ तपो-युक्तायै नमः
ॐ तापस्यै नमः
ॐ तपः-प्रियायै नमः
ॐ सप्त-धातु-मयी-मूर्त्यै नमः
ॐ सप्त-धात्वन्तराश्रयायै नमः
ॐ देह-पुष्ट्यै नमः
ॐ मनः-पुष्ट्यै नमः

ॐ अन्न-पुष्ट्यै नमः ॥ ३५० ॥
ॐ बलोद्धतायै नमः
ॐ औषध्यै नमः
ॐ वैद्य-मात्रे नमः
ॐ द्रव्य-शक्ति-प्रभाविन्यै नमः
ॐ वैद्यायै नमः
ॐ वैद्य-चिकित्सायै नमः
ॐ सु-पथ्यायै नमः
ॐ रोग-नाशिन्यै नमः
ॐ मृगयायै नमः
ॐ मृग-मांसादायै नमः ॥३६०॥
ॐ मृग-त्वचे नमः
ॐ मृग-लोचनायै नमः
ॐ वागुरायै नमः
ॐ बन्ध-रूपायै नमः
ॐ वधोद्धतायै नमः
ॐ वन्द्यायै नमः
ॐ बन्दि-स्तुतायै नमः
ॐ कारागार-बन्ध-विमोचिन्यै नमः
ॐ शृङ्खलायै नमः
ॐ खलहायै नमः ॥३७०॥
ॐ विद्यायै नमः
ॐ दृढ़-बन्ध-विमोचिन्यै नमः
ॐ अम्बिकायै नमः
ॐ बालिकायै नमः
ॐ अम्बायै नमः
ॐ स्वच्छायै नमः
ॐ साधु-जनार्चितायै नमः
ॐ कौलिक्यै नमः
ॐ कुल-विद्यायै नमः
ॐ सु-कुलायै नमः ॥३८०॥
ॐ कुल-पूजितायै नमः
ॐ काल-चक्र-भ्रम्यै नमः
ॐ भ्रान्तायै नमः
ॐ विभ्रमायै नमः
ॐ भ्रम-नाशिन्यै नमः
ॐ वातल्यै नमः
ॐ मेघ-मालायै नमः
ॐ सु-वृष्ट्यै नमः
ॐ सस्य-वर्धिन्यै नमः
ॐ अकारायै नमः ॥ ३९० ॥
ॐ इकारायै नमः
ॐ उकारायै नमः
ॐ ओकार-रूपिण्यै नमः
ॐ ह्रीङ्कारायै नमः
ॐ बीज-रूपायै नमः
ॐ क्लीङ्कारायै नमः
ॐ अम्बर-वासिन्यै नमः
ॐ सर्वाक्षर-मय्यै नमः
ॐ शक्त्यै नमः
ॐ अक्षरायै नमः ॥४००॥
ॐ वर्ण-मालिन्यै नमः
ॐ सिन्दूरारुण-वर्णायै नमः
ॐ सिन्दूर-तिलक-प्रियायै नमः
ॐ वश्यायै नमः
ॐ वश्य-बीजायै नमः
ॐ लोक-वश्य-विभाविन्यै नमः
ॐ नृप-वश्यायै नमः
ॐ नृपैस्सेव्यायै नमः
ॐ नृप-वश्य-कर्यै नमः
ॐ प्रियायै नमः ॥४१०॥
ॐ महिषायै नमः
ॐ नृप-मान्यायै नमः
ॐ नृ-मान्यायै नमः
ॐ नृप-नन्दिन्यै नमः
ॐ नृप-धर्म-मय्यै नमः
ॐ धन्यायै नमः
ॐ धन-धान्य-विवर्धिन्यै नमः
ॐ चतुर्वर्ण-मयी-मूर्त्यै नमः
ॐ चतुर्वर्णैश्च-पूजितायै नमः
ॐ सर्व-धर्म-मय्यै नमः ॥४२०॥
ॐ सिद्ध्यै नमः
ॐ चतुराश्रम-वासिन्यै नमः
ॐ ब्राह्मण्यै नमः
ॐ क्षत्रियायै नमः
ॐ वैश्यायै नमः
ॐ शूद्रायै नमः
ॐ अवर-वर्णजायै नमः
ॐ वेद-मार्ग-रतायै नमः
ॐ यज्ञायै नमः
ॐ वेद्यै नमः ॥४३०॥
ॐ विश्व-विभाविन्यै नमः
ॐ अस्त्र-शस्त्र-मय्यै नमः
ॐ विद्यायै नमः
ॐ वर-शस्त्रास्त्र-धारिण्यै नमः
ॐ सु-मेधायै नमः
ॐ सत्य-मेधायै नमः
ॐ भद्र-काल्यपराजितायै नमः
ॐ गायत्र्यै नमः
ॐ सत्-कृत्यै नमः

ॐ सन्ध्यायै नमः ॥४४०॥
ॐ सावित्र्यै नमः
ॐ त्रिपदाऽऽश्रयायै नमः
ॐ त्रि-सन्ध्यायै नमः
ॐ त्रि-पद्यै नमः
ॐ धात्र्यै नमः
ॐ सु-पर्वायै नमः
ॐ साम-गायिन्यै नमः
ॐ पाञ्चाल्यै नमः
ॐ बालिकायै नमः
ॐ बालायै नमः ॥४५०॥
ॐ बाल-क्रीडायै नमः
ॐ सनातन्यै नमः
ॐ गर्भाधार-धरायै नमः
ॐ शून्यायै नमः
ॐ गर्भाशय-निवासिन्यै नमः
ॐ सुरारि-घातिन्यै नमः
ॐ कृत्यायै नमः
ॐ पूजनायै नमः
ॐ तिलोत्तमायै नमः
ॐ लज्जायै नमः ॥४६०॥
ॐ रस-वत्यै नमः
ॐ नन्दायै नमः
ॐ भवान्यै नमः
ॐ पाप-नाशिन्यै नमः
ॐ पट्टाम्बर-धरायै नमः
ॐ गीत्यै नमः
ॐ सु-गीत्यै नमः
ॐ ज्ञान-लोचनायै नमः
ॐ सप्त-स्वर-मय्यै नमः

ॐ तन्त्र्यै नमः ॥४७०॥
ॐ षड्ज-मध्यम-धैवतायै नमः
ॐ मूर्छनायै नमः
ॐ ग्राम-संस्थानायै नमः
ॐ मूर्छायै नमः
ॐ सु-स्थान-वासिन्यै नमः
ॐ अट्टाट्ट-हासिन्यै नमः
ॐ प्रेतायै नमः
ॐ प्रेतासन-निवासिन्यै नमः
ॐ गीत-नृत्य-प्रियायै नमः
ॐ कामायै नमः ॥४८०॥
ॐ तुष्टिदायै नमः
ॐ पुष्टिदायै नमः
ॐ अक्षयायै नमः
ॐ निष्ठायै नमः
ॐ सत्य-प्रियायै नमः
ॐ प्राज्ञायै नमः
ॐ लोलाक्षिण्यै नमः
ॐ सुरोत्तमायै नमः
ॐ स-विषायै नमः
ॐ ज्वालिन्यै नमः ॥४९०॥
ॐ ज्वालायै नमः
ॐ विश्व-मोहार्त्ति-नाशिन्यै नमः
ॐ विषार्यै नमः
ॐ नाग-दमन्यै नमः
ॐ कुरु-कुल्यायै नमः
ॐ अमृतोद्भवायै नमः
ॐ भूत-भीति-हरायै नमः
ॐ रक्षायै नमः
ॐ भूतावेश-निवासिन्यै नमः

ॐ रक्षोघ्न्यै नमः ॥५००॥
ॐ राक्षस्यै नमः
ॐ रात्र्यै नमः
ॐ दीर्घ-निद्रा-निवारिण्यै नमः
ॐ चन्द्रिकायै नमः
ॐ चन्द्र-कान्त्यै नमः
ॐ सूर्य-कान्त्यै नमः
ॐ निशाचर्यै नमः
ॐ डाकिन्यै नमः
ॐ शाकिन्यै नमः
ॐ शिष्यायै नमः ॥५१०॥
ॐ हाकिन्यै नमः
ॐ चक्र-वाकिन्यै नमः
ॐ सितायै नमः
ॐ सित-प्रियायै नमः
ॐ स्वङ्गायै नमः
ॐ सकलायै वन-देवतायै नमः
ॐ गुरु-रूप-धरायै नमः
ॐ गुर्व्यै नमः
ॐ मृत्यवे नमः
ॐ मार्यै नमः ॥५२०॥
ॐ विशारदायै नमः
ॐ महा-मार्यै नमः
ॐ विनिद्रा-तन्द्रायै नमः
ॐ मृत्यु-विनाशिन्यै नमः
ॐ चन्द्र-मण्डल-सङ्काशायै नमः
ॐ चन्द्र-मण्डल-वासिन्यै नमः
ॐ अणिमादि-गुणोपेतायै नमः
ॐ सु-स्पृहायै नमः
ॐ काम-रूपिण्यै नमः

ॐ अष्ट-सिद्धि-प्रदायै नमः
ॐ प्रौढ़ायै नमः
ॐ दुष्ट-दानव-घातिन्यै नमः
ॐ अनादि-निधनायै नमः
ॐ पुष्टयै नमः
ॐ तुर्बाहवे नमः
ॐ चतुर्मुख्यै नमः
ॐ चतुस्समुद्र-शयनायै नमः
ॐ चतुर्वर्ग-फल-प्रदायै नमः
ॐ काश-पुष्प-प्रतीकाशायै नमः
ॐ शरत्-कुमुद-लोचनायै नमः
ॐ भूतायै नमः
ॐ भव्यायै नमः
ॐ भविष्यायै नमः
ॐ शैलजायै नमः
ॐ शैल-वासिन्यै नमः
ॐ वाम-मार्ग-रतायै नमः
ॐ वामायै नमः
ॐ शिव-वामाङ्ग-वासिन्यै नमः
ॐ वामाचार-प्रियायै नमः
ॐ तुष्टयै नमः ॥ ५५० ॥
ॐ लोपामुद्रायै नमः
ॐ प्रबोधिन्यै नमः
ॐ भूतात्मने नमः
ॐ परमात्मने नमः
ॐ भूत-भाव-विभाविन्यै नमः
ॐ मङ्गलायै नमः
ॐ सुशीलायै नमः
ॐ परमार्थ-प्रबोधिन्यै नमः
ॐ दक्षिणायै नमः
ॐ दक्षिणा-मूर्त्यै नमः ॥ ५६० ॥
ॐ सुदीक्षायै नमः

ॐ हरि-प्रसुवे नमः
ॐ योगिन्यै नमः
ॐ योग-युक्तायै नमः
ॐ योगाङ्ग-ध्यान-शालिन्यै नमः
ॐ योग-पट्ट-धरायै नमः
ॐ मुक्तायै नमः
ॐ मुक्तानां परमा-गत्यै नमः
ॐ नारसिंह्यै नमः ॥ ५७० ॥
ॐ सु-जन्मने नमः
ॐ त्रि-वर्ग-फल-दायिन्यै नमः
ॐ धर्मदायै नमः
ॐ धनदायै नमः
ॐ एकायै नमः
ॐ कामदायै नमः
ॐ मोक्षदायै नमः
ॐ द्युतयै नमः
ॐ साक्षिण्यै नमः
ॐ क्षणदायै नमः ॥ ५८० ॥
ॐ दक्षायै नमः
ॐ मोक्षदायै नमः
ॐ कोटि-रूपिण्यै नमः
ॐ क्रतवे नमः
ॐ कात्यायन्यै नमः
ॐ स्वच्छायै नमः
ॐ सुच्छन्दायै नमः
ॐ कवि-प्रियायै नमः
ॐ सत्यागमायै नमः
ॐ बहिःस्थायै नमः
ॐ काव्य-शक्त्यै नमः
ॐ कवित्वदायै नमः
ॐ मेना-पुत्र्यै नमः
ॐ सत्यै नमः

ॐ मात्रे नमः
ॐ मैनाक-भगिन्यै नमः
ॐ तटिते नमः
ॐ सौदामिन्यै नमः
ॐ सु-दामायै नमः
ॐ सु-धाम्ने नमः ॥ ६०० ॥
ॐ धाम-शालिन्यै नमः
ॐ सौभाग्य-दायिन्यै नमः
ॐ द्युवे नमः
ॐ सुभगायै नमः
ॐ द्युति-वर्धिन्यै नमः
ॐ श्रियै नमः
ॐ कृत्ति-वसनायै नमः
ॐ कङ्कालयै नमः
ॐ कलि-नाशिन्यै नमः
ॐ रक्त-बीज-वधोद्युक्तायै नमः
ॐ सु-तन्तवे नमः
ॐ बीज-सन्तत्यै नमः
ॐ जगज्जीवायै नमः
ॐ जगद्-बीजायै नमः
ॐ जगत्-त्रय-हितैषिण्यै नमः
ॐ चामीकर-रुचये नमः
ॐ चन्द्रयै नमः
ॐ साक्षाद्यायै नमः
ॐ षोडशी-कलायै नमः
ॐ यत्-तत्-पदानुबन्धायै नमः
ॐ यक्षिण्यै नमः
ॐ धनदाऽर्चितायै नमः
ॐ चित्रिण्यै नमः
ॐ चित्र-मायायै नमः
ॐ विचित्रायै नमः
ॐ भुवनेश्वर्यै नमः

ॐ चामुण्डायै नमः
ॐ मुण्ड-हस्तायै नमः
ॐ चण्ड-मुण्ड-वधोद्यतायै नमः
ॐ अष्टम्यै नमः ॥ ६३० ॥
ॐ एकादश्यै नमः
ॐ पूर्णायै नमः
ॐ नवम्यै नमः
ॐ चतुर्दश्यै नमः
ॐ अमायै नमः
ॐ कलश-हस्तायै नमः
ॐ पूर्ण-कुम्भ-पयोधरायै नमः
ॐ अभीरवे नमः
ॐ भैरव्यै नमः
ॐ भीरवे नमः ॥ ६४० ॥
ॐ भीमायै नमः
ॐ त्रिपुर-भैरव्यै नमः
ॐ महा-रुण्डायै नमः
ॐ रौद्र्यै नमः
ॐ महा-भैरव-पूजितायै नमः
ॐ निर्मुण्डायै नमः
ॐ हस्तिन्यै नमः
ॐ चण्डायै नमः
ॐ कराल-दशनाननायै नमः
ॐ करालायै नमः ॥ ६५० ॥
ॐ विकरालायै नमः
ॐ घोरायै नमः
ॐ घुर्घुर-नादिन्यै नमः
ॐ रक्त-दन्तायै नमः
ॐ ऊर्ध्व-केश्यै नमः
ॐ बन्धूक-कुसुमारुणायै नमः
ॐ कादम्बिन्यै नमः
ॐ पटासायै नमः

ॐ काश्मीर्यै नमः
ॐ कुङ्कुम-प्रियायै नमः
ॐ क्षान्त्यै नमः
ॐ बहु-सुवर्णायै नमः
ॐ रत्यै नमः
ॐ बहु-सुवर्णदायै नमः
ॐ मातङ्गिन्यै नमः
ॐ वरारोहायै नमः
ॐ मत्त-मातङ्ग-गामिन्यै नमः
ॐ हंसायै नमः
ॐ हंस-गत्यै नमः
ॐ हंस्यै नमः ॥ ६७० ॥
ॐ हंसोज्ज्वल-शिरोरुहायै नमः
ॐ पूर्ण-चन्द्र-मुख्यै नमः
ॐ क्षमायै नमः
ॐ स्मितास्यायै नमः
ॐ श्याम-कुण्डलायै नमः
ॐ महिष्यै नमः
ॐ लेखन्यै नमः
ॐ लेखायै नमः
ॐ सु-लेखायै नमः
ॐ लेखक-प्रियायै नमः
ॐ शङ्खिन्यै नमः
ॐ शङ्ख-हस्तायै नमः
ॐ जलस्थायै नमः
ॐ जल-देवतायै नमः
ॐ कुरु-क्षेत्रायै नमः
ॐ अवन्यै नमः
ॐ काश्यै नमः
ॐ मथुरायै नमः
ॐ काञ्च्यै नमः
ॐ अवन्तिकायै नमः ॥ ६९० ॥

ॐ अयोध्यायै नमः
ॐ द्वारकायै नमः
ॐ मायायै नमः
ॐ तीर्थायै नमः
ॐ तीर्थ-कर-प्रियायै नमः
ॐ त्रि-पुष्करायै नमः
ॐ अप्रमेयायै नमः
ॐ कोशस्थायै नमः
ॐ कोश-वासिन्यै नमः
ॐ कौशिक्यै नमः ॥ ७०० ॥
ॐ कुशावर्तायै नमः
ॐ कौशाम्ब्यै नमः
ॐ कोश-वर्धिन्यै नमः
ॐ कोशदायै नमः
ॐ पद्म-कोशाक्ष्यै नमः
ॐ कुसुम्भ-कुसुम-प्रियायै नमः
ॐ तोतलायै नमः
ॐ तुला-कोट्यै: नमः
ॐ कोटरस्थायै नमः
ॐ कोटराश्रयायै नमः ॥ ७१० ॥
ॐ स्वयम्भुवे नमः
ॐ सु-रूपायै नमः
ॐ स्वरूपायै नमः
ॐ पुण्य-वर्धिन्यै नमः
ॐ तेजस्विन्यै नमः
ॐ सु-भिक्षायै नमः
ॐ बलदायै नमः
ॐ बल-दायिन्यै नमः
ॐ महा-कोश्यै नमः
ॐ महा-वार्त्तायै नमः ॥ ७२० ॥
ॐ बुद्ध्यै नमः
ॐ सदसदात्मिकायै नमः

ॐ महा-ग्रह-हरायै नमः
ॐ सौम्यायै नमः
ॐ विशोकायै नमः
ॐ शोक-नाशिन्यै नमः
ॐ सात्त्विक्यै नमः
ॐ सत्त्व-संस्थायै नमः
ॐ राजस्यै नमः
ॐ रजो-वृतायै नमः ॥ ७३० ॥
ॐ तामस्यै नमः
ॐ तमो-युक्तायै नमः
ॐ गुण-त्रय-विभाविन्यै नमः
ॐ अव्यक्तायै नमः
ॐ व्यक्त-रूपायै नमः
ॐ वेद-विद्यायै नमः
ॐ शाम्भव्यै नमः
ॐ शङ्करायै नमः
ॐ कल्पिन्यै नमः
ॐ कल्पायै नमः ॥ ७४० ॥
ॐ मनः-सङ्कल्प-सन्तत्यै नमः
ॐ सर्व-लोक-मय्यै नमः
ॐ शक्त्यै नमः
ॐ सर्व-श्रवण-गोचरायै नमः
ॐ सर्व-ज्ञानवत्यै नमः
ॐ वाञ्छायै नमः
ॐ सर्व-तत्त्वावबोधिकायै नमः
ॐ जाग्रत्यै नमः
ॐ सुषुप्त्यै नमः
ॐ स्वप्नावस्थायै नमः ॥ ७५० ॥
ॐ तुरीयकायै नमः
ॐ सत्वरायै नमः
ॐ मन्दरायै नमः
ॐ मन्दायै नमः

ॐ मन्दिरायै नमः
ॐ मोद-धारिण्यै नमः
ॐ पान-भूम्यै नमः
ॐ पान-पात्र-पान-दान-
करोद्यतायै नमः
ॐ अपूर्णारुण-नेत्रायै नमः
ॐ किञ्चिदव्यक्त-भाषिण्यै नमः
ॐ आशा-पूरायै नमः
ॐ दीक्षायै नमः
ॐ दक्षायै नमः
ॐ दीक्षित-पूजितायै नमः
ॐ नाग-वल्ल्यै नमः
ॐ नाग-कन्यायै नमः
ॐ भोगिन्यै नमः
ॐ भोग-वल्लभायै नमः
ॐ सर्व-शास्त्र-मय्यै नमः
ॐ विद्यायै नमः ॥ ७७० ॥
ॐ सु-स्मृतये नमः
ॐ धर्म-वादिन्यै नमः
ॐ श्रुति-स्मृति-धरायै नमः
ॐ ज्येष्ठायै नमः
ॐ श्रेष्ठायै नमः
ॐ पाताल-वासिन्यै नमः
ॐ मीमांसायै नमः
ॐ तर्क-विद्यायै नमः
ॐ सु-भक्त्यै नमः
ॐ भक्त-वत्सलायै नमः
ॐ सुनाभये नमः
ॐ यातनायै नमः
ॐ जात्यै नमः
ॐ गम्भीरायै नमः
ॐ भाव-वर्जितायै नमः

ॐ नाग-पाश-धरायै नमः
ॐ मूर्त्यै नमः
ॐ अगाधायै नमः
ॐ नाग-कुण्डलायै नमः
ॐ सु-चक्रायै नमः ॥ ७९० ॥
ॐ चक्र-मध्यस्थायै नमः
ॐ चक्र-कोण-निवासिन्यै नमः
ॐ सर्व-मन्त्र-मय्यै नमः
ॐ विद्यायै नमः
ॐ सर्व-मन्त्राक्षरावल्यै नमः
ॐ मधु-स्रवायै नमः
ॐ स्रवन्त्यै नमः
ॐ भ्रामर्यै नमः
ॐ भ्रमरालकायै नमः
ॐ मातृ-मण्डल-मध्यस्थायै नमः
ॐ मातृ-मण्डल-वासिन्यै नमः
ॐ कुमार-जनन्यै नमः
ॐ क्रूरायै नमः
ॐ सुमुख्यै नमः
ॐ ज्वर-नाशिन्यै नमः
ॐ अतीतायै नमः
ॐ विद्यमानायै नमः
ॐ भाविन्यै नमः
ॐ प्रीति-मञ्जर्यै नमः
ॐ सर्व-सौख्य-वत्यै नमः
ॐ युक्त्यै नमः
ॐ आहार-परिणामिन्यै नमः
ॐ पञ्च-भूतानां निधानायै नमः
ॐ भव-सागर-तारिण्यै नमः
ॐ अक्रूरायै नमः
ॐ ग्रह-वत्यै नमः
ॐ विग्रहायै नमः

ॐ ग्रह-वर्जितायै नमः
ॐ रोहिण्यै नमः
ॐ भूमि-गर्भायै नमः ॥ ८२० ॥
ॐ काल-भुवे नमः
ॐ काल-वर्तिन्यै नमः
ॐ कलङ्क-रहितायै नमः
ॐ नार्यै नमः
ॐ चतुष्षष्ठियभिधावत्यै नमः
ॐ जीर्णायै नमः
ॐ जीर्ण-वस्त्रायै नमः
ॐ नूतनायै नमः
ॐ नव-वल्लभायै नमः
ॐ अरजायै नमः ॥ ८३० ॥
ॐ रति-प्रीति-रति-राग-
विवर्धिन्यै नमः
ॐ पञ्च-वात-गत्यै नमः
ॐ भिन्नायै नमः
ॐ पञ्च-श्लेष्माशयाधरायै नमः
ॐ पञ्च-पित्त-वत्यै नमः
ॐ शक्तयै नमः
ॐ पञ्च-स्थान-विभाविन्यै नमः
ॐ उदक्यायै नमः
ॐ वृषस्यन्त्यै नमः
ॐ बहिः-प्रस्रविण्यै नमः
ॐ त्र्यहायै नमः
ॐ रजः-शुक्र-धरायै नमः
ॐ शक्त्यै नमः
ॐ जरायुर्गर्भ-धारिण्यै नमः
ॐ त्रिकालज्ञायै नमः
ॐ त्रि-लिङ्गायै नमः
ॐ त्रि-मूर्त्यै नमः
ॐ त्रिपुर-वासिन्यै नमः

ॐ अरागायै नमः
ॐ शिव-तत्त्वायै नमः ॥ ८५० ॥
ॐ काम-तत्त्वानुरागिण्यै नमः
ॐ प्राच्यै नमः
ॐ अवाच्यै नमः
ॐ प्रतीच्यै नमः
ॐ उदीच्यै नमः
ॐ दिग्विदिग्दिशायै नमः
ॐ अहंकृत्यै नमः
ॐ अहङ्कारायै नमः
ॐ बालायै नमः
ॐ मायायै नमः ॥ ८६० ॥
ॐ बलि-प्रियायै नमः
ॐ स्रुचे नमः
ॐ स्रुवायै नमः
ॐ सामिधेन्यै नमः
ॐ सु-श्रद्धायै नमः
ॐ श्राद्ध-देवतायै नमः
ॐ मात्रे नमः
ॐ मातामह्यै नमः
ॐ तृप्त्यै नमः
ॐ पितृ-मात्रे नमः ॥ ८७० ॥
ॐ पितामह्यै नमः
ॐ स्नुषायै नमः
ॐ दौहित्रिण्यै नमः
ॐ पुत्र्यै नमः
ॐ पौत्र्यै नमः
ॐ नप्त्र्यै नमः
ॐ शिशु-प्रियायै नमः
ॐ स्तनदायै नमः
ॐ स्तन-धारायै नमः ॥ ८८० ॥
ॐ विश्व-योन्यै नमः

ॐ स्तनन्धय्यै नमः
ॐ शिशूत्सङ्ग-धरायै नमः
ॐ दोलायै नमः
ॐ लोल-क्रीडाभि-नन्दिन्यै नमः
ॐ उर्वश्यै नमः
ॐ कदलये नमः
ॐ केकायै नमः
ॐ विशिखायै नमः
ॐ शिखि-वर्तिन्यै नमः
ॐ खट्वाङ्ग-धारिण्यै नमः
ॐ खट्व-बाण-पुङ्खानुवर्तिन्यै नमः
ॐ लक्ष्य-प्राप्ति-करायै नमः
ॐ लक्ष्यालक्ष्यायै नमः
ॐ शुभ-लक्षणायै नमः
ॐ वर्तिन्यै नमः
ॐ सु-पथाचारायै नमः
ॐ परिखायै नमः
ॐ खन्यै नमः
ॐ वृत्त्यै नमः
ॐ प्राकार-वलयायै नमः
ॐ वेलायै नमः
ॐ मर्यादायै नमः
ॐ महोदधये नमः
ॐ पोषिण्यै नमः
ॐ शोषिण्यै नमः
ॐ शक्त्यै नमः
ॐ दीर्घ-केश्यै नमः
ॐ सु-लोमशायै नमः
ॐ ललितायै नमः
ॐ मांसलायै नमः ॥ ९१० ॥
ॐ तन्व्यै नमः
ॐ वेद-वेदाङ्ग-धारिण्यै नमः

ॐ नरासृक्-पान-मत्तायै नमः
ॐ नर-मुण्डास्थि-भूषणायै नमः
ॐ अक्ष-क्रीडायै नमः
ॐ रत्यै नमः
ॐ शार्यै नमः
ॐ सारिकायै नमः
ॐ शुक-भाषिण्यै नमः
ॐ शाम्बर्यै नमः ॥ ९२० ॥
ॐ गारुडी-विद्यायै नमः
ॐ वारुण्यै नमः
ॐ वरुणार्चितायै नमः
ॐ वाराह्यै नमः
ॐ तुण्ड-हस्तायै नमः
ॐ दंष्ट्रोद्धृत-वसुन्धरायै नमः
ॐ मीन-मूर्त्यै नमः
ॐ धरा-मूर्त्यै नमः
ॐ वदान्यायै नमः ॥ ९३० ॥
ॐ अप्रतिमाश्रयायै नमः
ॐ अमूर्तायै नमः
ॐ निधि-रूपायै नमः
ॐ शालग्राम-शिला-शुच्यै नमः
ॐ स्मृति-संस्कार-रूपायै नमः
ॐ सु-संस्कार-रूपायै नमः
ॐ संस्कृत्यै नमः
ॐ प्राकृतायै नमः
ॐ देश-भाषायै नमः
ॐ गाधायै नमः ॥ ९४० ॥
ॐ गीतये नमः
ॐ प्रहेलिकायै नमः
ॐ इडायै नमः
ॐ पिङ्गलायै नमः
ॐ पिङ्गायै नमः

ॐ सुषुम्नायै नमः
ॐ सूर्य-वाहिन्यै नमः
ॐ शशि-स्रवायै नमः
ॐ तालस्थायै नमः
ॐ काकिन्यमृत-जीविन्यै नमः
ॐ अणु-रूपा-बृहद्-रूपायै नमः
ॐ लघु-रूपा-गुरु-स्थिरायै नमः
ॐ स्थावरा-जङ्गमायै नमः
ॐ देव्यै नमः
ॐ कृत-कर्म फल-प्रदायै नमः
ॐ विषयाक्रान्त-देहायै नमः
ॐ निर्विशेषायै नमः
ॐ जितेन्द्रियायै नमः
ॐ विश्व-रूपायै नमः
ॐ चिदानन्दायै नमः ॥ ९६० ॥
ॐ पर-ब्रह्म-प्रबोधिन्यै नमः
ॐ निर्विकारायै नमः
ॐ निर्वैरायै नमः
ॐ विरत्यै नमः
ॐ सत्य-वर्धिन्यै नमः
ॐ पुरुषाज्ञायै नमः
ॐ भिन्नायै नमः
ॐ क्षान्त्यै नमः
ॐ कैवल्य-दायिन्यै नमः
ॐ विविक्त-सेविन्यै नमः
ॐ प्रज्ञायै नमः
ॐ जनयित्र्यै नमः
ॐ बहु-श्रुत्यै नमः
ॐ निरीहायै नमः
ॐ समस्तैकायै नमः
ॐ सर्व-लोकैक-सेवितायै नमः
ॐ सेवासेवायै नमः

ॐ सेव्यायै नमः
ॐ प्रियायै नमः
ॐ सेवा-फल-विवर्धिन्यै नमः
ॐ कलौ-कल्कि-प्रियायै नमः
ॐ काल्यै नमः
ॐ दुष्ट-म्लेच्छ-विनाशिन्यै नमः
ॐ प्रत्यक्षायै नमः
ॐ धनुर्यष्टयै नमः
ॐ खड्ग-धारायै नमः
ॐ दुरानत्यै नमः
ॐ अश्व-प्लुतये नमः
ॐ वल्गायै नमः
ॐ सृण्यै नमः ॥ ९९० ॥
ॐ सन्मृत्यु-वारिण्यै नमः
ॐ वीरभुवे नमः
ॐ वीर-मातायै नमः
ॐ वीर-सूर्वीर-नन्दिन्यै नमः
ॐ जय-श्रिये नमः
ॐ जय-दीक्षायै नमः
ॐ जयदायै नमः
ॐ जय-वर्धिन्यै नमः
ॐ सौभाग्य-सुभगाकारायै नमः
ॐ सर्व-सौभाग्य-वर्धिन्यै नमः
ॐ क्षेमङ्कर्यै नमः
ॐ सिद्धि-रूपायै नमः
ॐ सत्-कीर्त्यै नमः
ॐ पथि-देवतायै नमः
ॐ सर्व-तीर्थ-मय्यै मूर्त्यै नमः
ॐ सर्व-देव-मय्यै प्रभायै नमः
ॐ सर्व-सिद्धि-प्रदा-शक्त्यै नमः
ॐ सर्व-मङ्गल-मङ्गलायै नमः ॥ १००८ ॥

ब्रह्म-निष्ठ महात्मा श्री 'निरञ्जन' विरचित

श्री भवानी-शतक

।। ॐ तत्-सद-ब्रह्मणे नमः ।।

पुष्पाञ्जलि

वन्दौं श्रीगुरु-पादुका, गणपति, श्रीशारदा सारदा ।
वन्दौं पितृ-पदाब्ज दिव्य, जननी भागीरथी ऊर्ध्वगा ।।
श्रीमाता जगदम्ब ब्रह्म-ललिता नारायणी शाश्वती ।
''धाम्ना स्वेन सदा निरस्त-कुहकं सत्यं परं धीमहि'' ।।
मनीषा मूर्च्छिता क्यों हो, वाग्-देवी जागृता सदा ।
प्रच्छन्ना सतताधारा, अनिरुद्धा सरस्वती ।।१
ग्रहे भास्कर से भर्ग, समर्पे चन्द्र चन्द्रिका ।
दाता की देन, दाता ! ले वाङ्-मयी सुमनाञ्जली ।।२

* * *

।। श्रीः पातु ।।

मङ्गलाचरण

वन्दौं देशिक-नाथ! ब्रह्म-निष्ठ-वर! व्यास-पद! ।
जयति महाम्बा मात, आदि-शक्ति अखिलेश्वरी ।।१
देह-भाव है दास, विमल जीव विश्वेश-रज ।
चिद्-घन आत्म-विलास, निश्चल-मती निरञ्जनी ।।२
अजपा अगम अपार, हंसा अगम अपार ज्यों ।
सिन्धु पारावार, विन्दु पारावार त्यों ।।३
घट में रमते राम, घट-घट में ज्योती जले ।
पग-पग पै रस-धाम, भाग्य-हीन पावे नहीं ।।४
तव मन्दिर ब्रह्माण्ड, विराट् वैश्वानर विभु !
काल-चक्र की पाँख, चँवर डुलावे रैन-दिन ।।५
गाथा-छन्द-भवानि, स्तुति चार फल-दायिनी ।
जय जय जय जयति महानि, दुस्तर भव-सागर-तरनि ।।६

* * *

श्रीभवानी-शतक

बनी विश्व की वाटिका है विशाला, कुजे कोकिला मत्त त्रिपुराम्ब बाला ।
कली-फूल-फल-पत्र में है समाई, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।१
जपा-सिन्दुरी-आरुणी रूप-राशी, महा-मूल्य-माणिक्य मौलि प्रकाशी ।
त्रिनेत्रा नमः शाङ्करी भास्वरानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।२
धरी चूनरी सप्त-रङ्गी विचित्रा, निशा-नाथ[1]-तिथि अष्टमी भाल चित्रा ।
प्रभा-नासिका-रत्न तारा लजानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।३
विभूति रमी भाल सिन्दूर सोहे, मदोन्मादिनी लालिमा नेत्र मोहे ।
नमो काम-कामेश्वरी अर्द्ध-नारी[2], पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।४
कला पञ्च-शर की त्रि-विन्दु-स्वरूपा, गुरु-देवता-मन्त्र ध्याता अभेदा ।
हरार्द्धा परा-चित्-कला श्री शिवानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।५
महा-प्राण-शक्ति! जगा दे प्रभञ्जन, जहाँ शून्य में मध्य विन्दु निरञ्जन ।
किसी ज्ञान-विज्ञान की पहुँच नाहीं, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।६
बिना तालिका ओष्ठ ताला लगा क्या? कहो मर्म में तीक्ष्ण भाला लगा क्या?
कहाँ! बोल ब्रज-भामिनी! कृष्ण-काली, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।७
रचे रास रासेश्वरी अष्ट-दल में, पिनाकी करे ताण्डवी नृत्य पल में ।
सजे साज नट-राज शम्भू कपाली, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।८
मृगी भार्गवी भर्ग अम्बर फैला, त्रिखण्डा झषा खड्ग योनि त्रिशूला ।
झुकी तत्त्व-मुद्रा महा-पात्र-पाणी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।९
फणि-व्याल फुत्कार वृष केसरी भी, जटा-जूट जय-गर्जना सुर-सरी की ।
करे लास्य अट-हास्य काली कराली, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।१०
बजे शङ्ख डमरू तुरी और सिङ्गी, जगे वीर बेताल औ शृङ्गि भृङ्गी ।
शिवा-नाद से गूँज उठी सृष्टि सारी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।११
सभी सिद्धि-गण साथ गण-नाथ नाचे, कलापी[3] चढ़े देव-सेनानि[4] नाचे ।
भरी मन्त्र-चैतन्य से ब्रह्म-नाली, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।१२

१. चन्द्रमा, २. अर्द्ध-नारीश्वर, ३. मयूर, ४. कार्त्तिक स्वामी

छिछुम्-छुम छिछुम्-छुम ध्वनि नूपुरों की, पखावाज डफ खञ्जरी बाँसुरी भी ।
बजे मञ्जिरा बीन कर्ताल ताली, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।१३

धरा सिन्धु कैलास नग-राज नाचें, भरा व्योम तारावली-वृन्द नाचे ।
भुले मान-सर वीचियों में मराली, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।१४

चमत्कार है विश्व विश्वम्भरी का, नमस्कार शम्भु स्वयम्भू हरी का ।
करें आरती सूर्य द्विज-राज-ज्ञानी[५], पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।१५

सदा-सर्वदा शारदा श्री परा हो, सदा रत्न-करवा सुधा का भरा हो ।
शुची-शाम्भवी-दिव्यता की निशानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।१६

किया रक्त-अरि पान अलि-पान जैसे, किया भण्ड-दल नाश खल-त्रासजैसे ।
दिया भक्त वरदान वर-अभय-वाली, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।१७

जया पार्वती पद्मजा पीत-वस्त्रा, त्रपा[६] तारिणि भैरवी छिन्नमस्ता ।
उमा राज-राजेश्वरी तू मृडानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।१८

तुही शैलजा ब्रह्मगा चन्द्रघण्टा, तु कुष्माण्डि कात्यायनी स्कन्द-माता ।
महा-गौरि तू सिद्धिदा काल-रात्रि, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।१९

तुही 'आइ' आशापुरी अर्द्ध-चन्द्रा, तुही काल औ मोह-रात्री महोग्रा ।
निशा-घोर तू हे महीषासुरघ्नी ! पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।२०

तुही डाकिनी राकिनी लाकिनी तू, तुही काकिनी साकिनी हाकिनी तू ।
तुही याकिनी ऊर्ध्व-ब्रह्माण्ड-वासी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।२१

रवी में प्रभा चन्द्र में चन्द्रिका तू, छवी सत्र में भक्त में भावना तू ।
महा-याग-श्री सोम-पीयूष-दात्री, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।२२

तुही भ्रामरी रक्त-दन्ती शताक्षी, तुही रेणुका नन्दजा काल-हन्त्री ।
क्षुधा क्षोभिणी शोभना मन्द-हासी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।२३

सती जानकी सीत साकेत-धामा, तुही रुक्मिणी राधिका सत्यभामा ।
पुरी द्वारिका कृष्ण की राजधानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।२४

स्वधा तृप्तिदा शान्तिदा अग्नि-जाया, वषट्-कार ह्रींङ्कारिणी रुद्र-माया ।
कृशा कामिनी दण्डिनी शूल-पाणी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।२५

५. चन्द्रमा, ६. लज्जा,

तिरस्कारिणी मोहिनी अश्व-रूढ़ा, कुमारी युवा चञ्चला प्रौढ़ वृद्धा ।
चरा बहु-चरा धूमिनी श्रीधराणी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।२६

सुधा-सार-शाकम्भरी अन्न-दात्री, निशा-मध्य स्वप्नावती विश्व-धात्री ।
प्रभा-पुञ्ज से मोह-रात्री सिरानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।२७

अजा सात्त्विकी राजसी तामसी तू, प्रजा-पालिनी हारिणी तापसी तू ।
निराकार साकार जानी अजानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।२८

तुही सिन्धु सारस्वती चन्द्र-भागा, तुही कौशिकी गोमती तुङ्ग कृष्णा ।
तु कावेरी मन्दाकिनी हस्त-वारी[७], पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।२९

त्रिवेणी तुही गण्डकी शोण भीमा, तु गोदावरी नर्मदा ब्रह्म-पुत्रा ।
गया घर्घरा यामुनी गङ्ग रावी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।३०

विशालाक्षि मीनाक्षि कामाक्षि कामा[८], तुही पुष्करी पावनी है ललामा ।
महा-काल कालिञ्जरी गुह्य-काली, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।३१

तुही अम्बिका अर्बुदा चित्र-कूटा, हरी-सिद्धि गुह्येश्वरी गृध्र-कूटा ।
महा-लक्ष्मि कोलापुरी कञ्ज-वासी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।३२

तुही मच्छ कच्छी वराही तुही है, महा-योग-निद्रा हरी की तुही है ।
दशों विष्णु-अवतार की रूप-खानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।३३

तुही वेद-माता[९] चतुर्विंश-वर्णा, तुही जीव शिव की बनी 'द्वा सुपर्णा' ।
कला नाद बिन्दू तुही तार तारी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।३४

तुही ज्ञान-इच्छा-क्रिया-शक्ति-भासा, अनुप्राणिनी श्वास-निःश्वास-वासा ।
अमा पूर्णिमा अष्टमी पर्व-पाली, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।३५

रमा वैष्णवी विश्व-व्यापार-शीला, तुही चण्डिका चण्ड-संहार-लीला ।
भली-भीम मातङ्गिनी भद्रकाली, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।३६

तरु-कल्प की मूल शाखादि तू है, अनादि प्रथा ब्रह्म-गाथा तुही है ।
न आदी इतिश्री नहीं मध्य-शाली, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।३७

तुही वाक्य-शक्ति स्तुति गान गाती, तुही नेत्र-ज्योति विराटी दिखाती ।
महा-मूर्ख संसार माँ! तू सयानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।३८

७.'कर-तोया' पूर्व बङ्गाल की एक पवित्र नदी, ८. कामाख्या, ९. गायत्री

तुही दृश्य-दृष्टि सलोपा अलोपा, तु एका अनेका अनेकाहि एका ।
ध्वनी मात्र बोले ''नमश्चण्डिकायै'', पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।३९

अखण्डा तुही अच्युता अद्भुता तू, अभिन्ना प्रभिन्ना जगद्-व्यापिका तू ।
त्रयी लोक में तू हरानी ! समानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।४०

जले ज्योति ज्वालामुखी हिङ्गुला की, तुही भूचरी खेचरी विन्ध्य-वासी ।
पती धूर्जटी की सती सिंह-वाही, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।४१

विधी-लेखनी लेखिका लेख तू है, स्वयं-साक्षिणी भोगिणी भोग तू है ।
विधात्री विधू-शेखरी पञ्च-पारी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।४२

प्रभू की प्रभूता अकेली तू ही हो, विधू की कला अन्तिमा माँ! तूही हो ।
जबानी जमा-खर्च ने हार मानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।४३

सृजे तत्त्व छत्तीस सृष्टी विकासी, सदा-शिव जहाँ आदि से अन्त-वासी ।
तुही अष्ट-सिद्धी निधी की निदानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।४४

स्वयं आप में आप श्रद्धा तुही है, जपे श्वास-निःश्वास विश्वास तू है ।
नहीं शोक सन्ताप सेवे सुरानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।४५

मनो-धी-अहं भी चिदाकाश तू है, ध्वनी घ्राण जिह्वा दृगाकार तू है ।
त्वगाकार तू मारुती मन्मथारी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।४६

तुही ज्ञान-ज्ञाता अनावर्त-ज्ञेया, तुही ध्यान-ध्याता परावर्त-ध्येया ।
प्रमाता प्रमेया अनन्ता प्रमाणी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।४७

भुजा चार दश अष्ट आयूध खड्गी, गदा शूल कोदण्ड शर पाश चक्री ।
शची वज्रिणी वृत्र-विच्छेद-कारी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।४८

प्रतापी प्रचण्डा प्रगल्भा प्रबुद्धा, सु-वीरा सु-वीर-प्रिया वीर-वन्द्या ।
सुरेशी महा-व्योम-केशी स्मरामि, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।४९

अधः-ऊर्ध्व में रत्न-सिंहासनी तू, मणि-द्वीप में पञ्च-प्रेतासनी तू ।
रही दाहिने वाम महा-राज-रानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।५०

कहे कौन माँ ! योग-वेदान्त जाना? कहाँ मन्त्र माँ! तन्त्र का भी ठिकाना !
भरी मूल से शून्य लौं श्री महानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।५१

तुही वेद-वेदान्त की गङ्ग-धारा, तुही आगमी योग-शक्ति अपारा ।
नमस्कार पद-कञ्ज-मकरन्द लाली, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।५२

परा पश्यती मध्यमा वैखरी तू, स्वरा व्यञ्जना ह्रस्व दीर्घाक्षरी तू ।
क्षरा अक्षरा मालिनी मन्त्र-त्राणी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।५३

कवी-काव्य आलाप आमोद तेरा, गिरा-गीत सङ्गीत तेरा बसेरा ।
श्रुती ताल लय राग स्वर साम-गानी,पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।५४

अति क्रोधिनी क्रोध-हीना कृपाली, अहङ्कार-शून्या अहङ्कार-शाली ।
''अयं त्वं अहं'' एक लीला निराली, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।५५

नव-द्वार की देह प्रासाद राजे, नवों में सदा एक तू ही विराजे ।
दशों से परे षोडशाधार-धारी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।५६

महा-भूत पाँचों तुम्हारी विभूति, महा-भाव आवेश है रुद्र-दूती ।
सधर्मा अधर्मा धरे ध्यान ध्यानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।५७

गुणाढ्या गुणातीत गौरी गणाम्बा, गुरु-शक्ति गूढ़ा गुहास्था पराम्बा ।
गुरु-बोध-गम्या गुरु-तत्त्व-दानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।५८

त्रिलोकी त्रिलिङ्गी त्रिपुरान्तकी तू, त्रिमूर्ति त्रिधा सप्तधा व्याहृति तू ।
त्रिविक्रम त्रिधा पाद-सञ्चार-कारी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।५९

महा-राष्ट्र-साम्राज्य-स्वातन्त्रिका तू, महा-नाट्य की भूमिका प्रेक्षिका तू ।
तू ही नाट्य-शाला नटी सूत्र-धारी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।६०

सजी वीर-सेना नरों-वानरों की, बचे लाज भी भारती संस्कृती की ।
नराकार नारायणों की भलाई, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।६१

गज-ग्राह का युद्ध संसार-व्यापी, पराजय-व्यथा देव को ना कदापि ।
अती मन्द ज्योती तमिस्रा प्रहारी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।६२

तृषा से वृथा त्रस्त संसार सारा, बहे कुम्भ-वक्षोज से दुग्ध-धारा ।
सुझा दे मती त्राण हो प्राण-प्राणी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।६३

कहें कोई ''हस्ती हरी की कहाँ है?'' कहें ''जानकी-राम में जान क्या है ?''
कहें ''धर्म है धूर्त पाखण्ड भारी'', पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।६४

''कहाँ पाप और पुण्य-पूजा कहाँ की?'' ''गिरे कौन? उत्थान लज्जा कहाँ की?''
''भरो पेट जी! भोग की भाँग छानी'', पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।६५
वृथा कल्पना-जल्पना तर्क-शास्त्री, खिले चाँदनी ज्यों अमावास-रात्री ।
सुनो सूर्य्य-गाथा उलू की जबानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।६६
दुकानें खुलीं धर्म की राम लूटा, सभा संसदों में जगन्नाथ झूठा ।
बेचारे हरी की हुई मान-हानि, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।६७
दनादन दगे मौत बन्दूक-गोली, जरा होश भी? ज्यों चरे गाय भोली ।
दया हो तुम्हारी रहे सावधानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।६८
घने घोर घन में दमक दामिनी की, सरी व्योम-सर में जरा यामिनी-सी ।
युवा-शाश्वती-चिन्मयी चन्द्रिका-सी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।६९
मथा वारिधी दानवों-निर्जरों ने, हलाहल कपाली, सुधा पी सुरों ने ।
अभागे दिती-पुत्र के हाथ खाली, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।७०
ऋषि ''धार तलवार का मार्ग'' बोले, कला-बाज नट-राज का ताज डोले ।
जहाँ ''नान्य पन्था'' वदे वेद-वाणी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।७१
हरे क्यों हरी धर्म का मर्म जाने? विवेकी बने कर्म का धर्म जाने ।
फँसे सेठ भी भूल करता किरानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।७२
रती-भक्ति अन्धी गती हीन ज्ञानी, बधीरी सुने शारदा की सितारी ।
बिना पैर-पर की गती व्योम-यानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।७३
जगे अङ्ग रोमाञ्च गरुड़-ध्वजा के, अलङ्कार झङ्कार जो सिन्धुजा के ।
टुटी द्वैत-अद्वैत की ''शब्द-जाली'', पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।७४
छिपे बीन के तार-पर्दे निराले, स्वरों की कला मीड़ जाले निराले ।
भृगु विप्र ने विष्णु को लात मारी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।७५
अयोध्या-पती तारिणी की कृपा से, बली मारुती रामजी की दया से ।
सुनी कृष्ण-कात्यायनी की कहानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।७६
गिरि-कर्णिका पुष्प से अर्चना हो, मणि-कर्णिका तीर्थ में तर्पणा हो ।
प्रसन्ना न क्यों हो पुरेशी पुरानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।७७

नहीं नासिका-रन्ध्र का मार्ग रोके, नहीं पाद मोड़े नहीं ताल ठोके ।
स्थिरा-दृष्टि भ्रू-मध्य तारा-ध्रुवाणी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।७८
नहीं लेश सन्देह जञ्जाल छूटे, जहाँ मोह-शोकादि का तार टूटे ।
यदी भाव हो शाम्भवी शक्ति-शाली, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।७९
तुही प्रेयसी श्रेयसी पातकारी, तुही सूक्ष्म-से-सूक्ष्म औ स्थूल-कायी ।
तुही सिद्ध-विद्या-धारी मुण्ड-माली, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।८०
सुधा-धार-बौछार दुष्काल भागे, मिटे दुःख दुर्भाग्य सौभाग्य जागे ।
ग्रहें काँच क्यों? रत्न-थाती लुटाती, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।८१
किसी एक का ज्ञान अज्ञान नाशे, उसी ज्ञान से ईश-आभा प्रकाशे ।
उसी राह की जो मिले राह-दानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।८२
कटाकट कराली-बजे काल-दंष्ट्रा, प्रसन्ना निरातङ्किनी तू न रुष्टा ।
कली-काल को दन्त-पंक्ति चबाती, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।८३
नहीं खेश[१०] राकेश[११] की ज्योति जाती, मनो-बुद्धि की बात भी ना सुनाती ।
गए सो नहीं लौटते ब्रह्म-ज्ञानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।८४
परे पञ्च-परमेश से एक-ज्ञानी, परे द्वन्द्व-धुर-फन्द से एक-ध्यानी ।
समाधी सधी शाश्वती हैम-वारी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।८५
कुटी भव्य प्रासाद या जङ्गलों में, गिरे गर्त्त में जाह्नवी के कुलों में ।
निजानन्द सर्वत्र जो शुक्ल-ध्यानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।८६
हृषीकेश कौन्तेय की दिव्य-गीता, पढ़े या सुने जन्म-संग्राम जीता ।
फले भाव-भक्ति टले आत्म-ग्लानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।८७
स्वयं आपका आप उद्धार कीजै, स्वयं मित्र-शत्रु नहीं दोष दीजै ।
करे प्रार्थना शुद्ध-बुद्धी सुझाती, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।८८
ऋणी वा धनी की नहीं खोज कीजै, नहीं शत्रु या मित्र में ध्यान दीजै ।
रमे राम क्यों मूढ़ ! मेधा नसानी? पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।८९
भरे रत्न से काँच का खण्ड पाते, बड़ी भूल अज्ञान ''साक्षी'' भुलाते ।
अवस्था-त्रयी में तुरीया छिपानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।९०

१०. सूर्य, ११. चन्द्र

नहीं आत्म की जात जाती शरीरी, सुधा-सिन्धु है एक वीची घनेरी ।
अनेकों बना एक सङ्घर्ष जारी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।९१

बड़े कौन संसार में कौन छोटे? भरे एक ही नीर से सर्व लोटे ।
''अहं-पूर्ण'' के खण्ड-खण्डाभिमानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।९२

धरा-धाम-सम्पत्ति नहीं साथ देते, रुके कण्ठ में प्राण नहिं प्राणि चेते ।
कृपा-मात्र पद-पद्म से ऊर्ध्व-गामी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।९३

कभी भी किसी ने नहीं पार पाया, रुँधे कण्ठ देवर्षि ने गान गाया ।
कमाया महा-रत्न कल्याण-कारी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।९४

चली थी हवा सप्त-सिन्धु कहाँ थे? जली ब्रह्म-ज्योती शिवादी जहाँ थे ।
धराधर धरा-धारिणी तू हिमानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।९५

रहा दास नौ मास पाला तुम्हीं ने, पिलाया रुलाया खिलाया तुम्हीं ने ।
हँसाया सदा गोद माया भुलानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।९६

कृपा-सागरी लोक में नाम तेरा, कृपा-पात्र मैं भी सुनो! पुत्र तेरा ।
क्षमा धृष्टता की करो जो हमारी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।९७

गिरा राम के हाथ से एक ढेला, डुबा नीरधी-नीर में था अकेला ।
हँसे मारुती ''नाम का साथ नाहीं'', पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।९८

बड़े भाग्य से मानुषी देह पाते, बड़े भाग्य से राम का नाम पाते ।
बड़े भाग्य से पादुका भी पुजाती, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।९९

हयग्रीव वाशिष्ठ औ' जामदग्नि[१२] शुक व्यास क्रोधीश अत्री अगस्ती ।
गुरु-गौड़ गोविन्द शैवी प्रणाली, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।१००

सभी देव-कुल-कमल सिर-ताज तू है, सभी सिद्ध-जन बीच महा-राज तू है ।
कहो कौन भूले महा-वाक्य-वाणी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।१०१

रहे सङ्गती सज्जनों साधुओं की, हवा से बचे दुर्जनों की-खलों की ।
बसे वास वाराणसी गङ्ग-पानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।१०२

बजे नै[१३] सुरीली जहाँ में रुहानी, बसे दम-ब-दम में नजाकत रुहानी ।
नजारे-नजर नाज को भी सलामी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।१०३

१२. परशुराम, १३. बंशी

नहीं पाप संसार में क्षुद्रता-सा, नहीं सार संसार में दिव्यतासा ।
परे जो रहे सो बड़ा भाग्य-शाली, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।१०४

महा-पातकी नारकी भी न क्यों हो, त्रिधा ताप का भुक्त-भोगी न क्यों हो ।
जपे मङ्गला बाल दुर्गा त्रि-तारी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।१०५

यदि विश्व में दुःख-दावाग्नि व्यापे, यदि प्राणि-गण क्लेश सन्ताप तापें ।
बसो शान्ति बन हृदय-घर-घर दयाली, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।१०६

नया है नहीं विश्व में ना पुराना, नटी एक नारी धरे वेश नाना ।
भवानी-स्तुती भी नई ना पुरानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।१०७

बजी दुन्दुभी व्योम में दिव्यता की, गिरी पुष्प-राशि सुरों के करों की ।
खुली मञ्जुषा राम की रत्न-खानी, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।१०८

भजो राम-रामा भजो पूर्ण-कामा, भजो सर्वदा श्री घनश्याम-श्यामा ।
भजे सो बने क्षुद्र से रावणारि, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।१०९

करे भाव से पाठ शत-आठ पूरे, फलें चार फल काम हों क्यों अधूरे !
जहाँ ''श्री'' निरञ्जन सदा है दिवाली, पर-ब्रह्म-रूपां भवानीं भजामि ।।११०

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवावशिष्यते ।।

।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

कौलावधूत श्री १०८ निरञ्जन जी महाराज

अवधूत **श्री १०८ श्रीनिरञ्जन महाराज जी** का गृहस्थ जीवन का पूरा नाम **श्रीमुरारि भाई व्यास** था। आप कच्छ-निवासी सारस्वत ब्राह्मण थे। कम अवस्था से ही आपकी वाणी में मिठास थी, कहने में प्रवीणता थी। आपने प्रभास-क्षेत्र के विख्यात महात्मा पूज्य त्रिविक्रम तीर्थ महाराज से **'शाम्भव-दीक्षा'** प्राप्त की थी। श्री त्रिविक्रम तीर्थ महाराज **'शारदा-पीठ'** के शङ्कराचार्य थे, जिन्होंने गुप्तावतार बाबाश्री से **'अधोर-दीक्षा'** ली थी। गुप्तावतार बाबाश्री के कृतित्व से **'चण्डी'** के पाठक-बन्धु परिचित ही हैं।

महात्मा निरञ्जन की प्रतिभा के लिए **महात्मा गाँधी, पं० मालवीय जी, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, श्रीटण्डन जी, महाकवि नानालाल, हरिहर बाबा** जैसे लोगों ने सम्मानित किया था। **'चण्डी पत्रिका'** के प्रणेता **पं० देवीदत्त शुक्ल** उनके निकटतम आत्म-स्वरूप थे।

'चण्डी'-पुस्तक-माला की कुछ उपयोगी पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
➢ शााबर-मन्त्र-संग्रह (१-१२ भाग)	३९५/-
➢ मन्त्र-कल्पतरु (पुष्प १-२)	७०/-
➢ तन्त्रोक्त शब्द-ब्रह्म-साधना	४०/-
➢ मुद्राएँ एवं उपचार	१५/-
➢ सौन्दर्य-लहरी के यन्त्र-प्रयोग	२०/-
➢ सौन्दर्य-लहरी (संस्कृत एवं हिन्दी पद्यानुवाद सहित)	१५/-
➢ सार्थ सौन्दर्य-लहरी	७५/-
➢ श्रीचक्र-रहस्य	२०/-
➢ श्रीयन्त्र-साधना	१०/-
➢ श्रीविद्या-स्तोत्र-पंचकम्	३५/-
➢ षोडश-लक्ष्मी श्रीललिता-पूजा	२५/-
➢ चक्र-पूजा के स्तोत्र	२५/-
➢ बाबाश्री चरितामृत	३०/-
➢ आदि-शङ्कराचार्य अङ्क	१०/-
➢ रासलीला-विज्ञान	१०/-
➢ श्रीराम-नाम- अङ्क	१०/-
➢ कुम्भ-पर्व-अङ्क	१५/-
➢ शाक्त-धर्म क्या है?	१५/-
➢ हिन्दी प्राण-तोषिणी तन्त्र	४०/-
➢ हिन्दी महा-निर्वाण तन्त्र	५०/-
➢ काश्मीर की वैचारिक परम्परा	१०/-
➢ गङ्गा-यमुना-सरस्वती-पूजा अङ्क	५/-
➢ धर्म-चर्चा	१०/-
➢ दकारादि श्रीदुर्गा-सहस्त्र-नाम	२०/-
➢ भैरवोपदेश (९ पुस्तकें)	५०/-
➢ हिन्दुओं की पोथी	२५/-
➢ श्रीगुरु-तन्त्र	१५/-
➢ दीपावली-पूजा-विधि	१५/-

पर-ब्रह्म की चिन्मय-शक्तियाँ

जय माँ भैरवी!
परब्रह्म-रूपां भजामि

जय माँ धूमावती!
परब्रह्म-रूपां भजामि

जय माँ बगला!
परब्रह्म-रूपां भजामि

जय माँ मातंगी!
परब्रह्म-रूपां भजामि

जय माँ कमला!
परब्रह्म-रूपां भजामि

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें

श्रीचण्डी-धाम

अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-०६ ☆ फोन ०५३२-२५०२७८३, ९४५०२२२७६७
E-mail : Chandi_dham@rediffmail.com

श्रीभवानी-साधना

भवानि! त्वं दासे मयि वितर दृष्टिं स-करुणाम् ।
इति स्तोतुं वाञ्छन् कथयति भवानि! त्वमिति यः।।
तदैव त्वं तस्मै दिशसि निज-सायुज्य-पदवीम् ।
मुकुन्द - ब्रह्मेन्द्र - स्फुट - मुकुट - नीराजित - पदाम् ।।

– श्रीआदि-शङ्कराचार्य

हे माँ! हे करुणा-मयी, 'हे भवानी! आप अपने करुणा-मय दृष्टि-पात से मुझ दास को देखिए'–इस प्रकार आपका स्तवन करने की इच्छावाला ज्यों ही अपने मुख से 'भवानि! त्वं' इतने शब्द निकालता है, त्यों ही आप त्वरित उसे अपना सायुज्य-पद दे देती हैं।

जो पद मुकुन्द-ब्रह्मेन्द्रादि देवों के शीश-मुकुट से सेवित हैं तथा जिन चरण-कमलों की आरती देवों के मुकुटों के मणि की ज्योति से उतारी जाती है, मैं उन आप-श्री के चरणों में तल्लीन हो जाऊँ, ऐसा सतत ध्यान करनेवाले व्यक्ति में आपकी सिद्ध्यादि अनेक शक्तियाँ प्रकट होने लगती हैं।

गुप्तावतार बाबाश्री

प्रकाशक : श्रीऋतशील शर्मा, श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-६ ☎ ०९४५०२२२७६७